International Journal of Multidisciplinary Research and Development

IJMRD 2015; 2(2): 193-195
www.allsubjectjournal.com
Received: 15-01-2015
Accepted: 05-02-2015
E-ISSN: 2349-4182
P-ISSN: 2349-5979
Impact factor: 3.762

बृजभूषण शर्मा
शोधच्छात्रः J.R.F.)
राजस्थानविश्वविद्यालयः
जयपुरम् (राजस्थानम्) भारत

Correspondence:
बृजभूषण शर्मा
शोधच्छात्रः J.R.F.)
राजस्थानविश्वविद्यालयः
जयपुरम् (राजस्थानम्) भारत

समाज की चिन्ता का केन्द्र कविता में

बृजभूषण शर्मा

चराचर विश्व में जराजन्ममरणादिदुःखदावाग्नि से दग्ध आधिव्याधि से प्रपीड़ित पापादि से विषण्ण मायामोह से भ्रान्त मानव के मनः सन्ताप के निवारण के लिए सुख–शान्ति – समृद्धि के लिए कविजन कविता की रचना करते हैं। मम्मट भी कहते हैं कि–

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः पर–निर्वृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।। (काव्य॰1.2)

वस्तुतः कविता का समाज अर्थात मानवों के समूह के लिए महत्व को परिभाषित किया जाए तो कविता का तात्पर्य–'**सत्यं शिवं सुन्दरम्**' है। कविता में सत्य से तात्पर्य – स्वानुभूतिजन्य–कल्पनाकृत–हदयस्पर्शि सत्य से है। वह लोगो के हृदय को आह्लादित करता है, बुध्दि का विकास करता है, सद्भावना का विस्तार करता है। शिवं अर्थात कल्याण मुख्यतः धर्मशास्त्र एवं समाजशास्त्र का विषय है। परहितनिरतत्व–परार्थसाधनत्व–लोककल्याणजनकत्व व्यष्टि–समष्टि का अर्थ शिवशब्द से ग्राह्य है। सुन्दर पद से रम्यत्व–मनोज्ञत्व–हृद्यत्व का ग्रहण होता है। मधुरत्व–रम्यत्व क्या है ? यह जिज्ञासा समुत्पन्न होने पर कवि माघ कहते है कि– "**क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः**" (शिशु॰4.17)। इस प्रकार 'सत्यं शिवं सुन्दरं' से युक्त कविता ही समाज को सन्मार्ग के प्रति उन्मुख करती है। पी॰वी॰ शैली भी कहते है कि– **Poets are not only authors of language and music , but they are the institutors of laws and founders of civil society and inventors of art of life and the teachers who draw into certain propinquity with the Beautiful and the True. (P.B Shelley)**

इस प्रकार स्वतः सिध्द होता है कि समाज की चिन्ता का केन्द्र कविता में है। कविता के द्वारा कवियो ने समाज मे विद्यमान शुचिता और कुरीतियों, दलित–वाल्मीकि–गरीब–शोषित–पीड़ित–वञ्चित की भावानाओं को , उनकी स्थिति को समाज के सामने अपनी कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है। प्राचीनकाल हो या मध्यकाल या औपनिवेशिक या वर्तमानकाल कवियों नें अपनी कविता के माध्यम से सदा–सर्वदा–सर्वत्र समाज में जोश–जुनून – जज्वा –जागर्या की भावना समुत्पन्न की है। कविताकारो ने सामाजिकविषयों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समाज के सामने प्रस्तुत किया है। जैसे कि – रघुवंश महाकाव्य के आरम्भ में कविता–कामिनी के कमनीय–कान्त कालिदास ने रघुकुल के राजाओं का महत्व एवं योग्यता का वर्णन करनें के बहाने वसुन्धरा पर विद्यमान प्राणिमात्र के लिए सार्वभौमिक–सार्वकालिक–सारगार्भित रमणीय उपदेश दिए हैं। जैसे कि–

सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम्।
आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम्।।
यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनाम्।
यथापराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम्।।
त्यागाय संभृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।
यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम्।।
शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्।।

– (रघु॰ 1–5,6,7,8)

इन श्लोको के माध्यम से कवि ने सांसारिक जीवन के महत्व को बताते हुए सदसद् –कर्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान प्रसारित किया है। इस प्रकार भारतीय ऋषियों के द्वारा प्रचारित चिन्तन तथ्यों को मनोभिराम शब्दों में भारतीय जनता के हृदय में उतारनें का काम कलिदास की कविता ने सुचारू रूप से किया है।

आज का मानव समाज परस्पर कलह तथा वैमनस्य से छिन्न–भिन्न हो रहा है। मानवता के लिए यह महान् संकट का समय है। चारों तरफ भूख–भय–भ्रष्टाचार, आतंकवाद,बलात्कार,स्वार्थता परिलक्षित हो रहे हैं। किन्तु सभी का निदान हमारे ऋषियों–महर्षियों–कवियो ने वर्णित किया है। यथा–

ईशावास्यामिदं सर्वं, यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः, मा गृधः कस्यस्विध्दनम्।।(यजु॰40.1)
यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति।।(यजु॰40.6)
यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद् विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यत।।(यजु॰40.7)
सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।।(ऋग्॰10.191.2.4)
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

मानव जीवन में नैराश्यवाद के लिए स्थान नहीं है। लोगो को आशावादी रहना चाहिए। कवि कहते है कि – देहधारियो के लिए मरण ही प्रकृति है, जीवन तो विकृती मात्र है। जैसे कि

मरणं प्रकृति शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः।
क्षणमप्यतिष्ठते श्वसन्यदि जन्तुर्ननु लाभवानसौ।। (रघु॰8.87)

अतः जीवन को महान लाभ मानकर इसे सार्थक बनाने के लिए (धर्मार्थकाम का सामञ्जस्य स्थापित कर) अहर्निश प्रयत्नशील रहना चाहिए।

सामाजिक बन्धनों को भी कविताकारो ने अपनी कविता मे सुष्ठु प्रतिपादित किया है जो आज भी समाज में प्रासंगिक है। जैसे – पिता का पुत्री के प्रति स्नेह शाकुन्तलम मे। जब शकुन्तला अपने पति के साथ गम्यमान होती है तो उस समय ऋषि कण्व की स्थिति कैसी हो जाती है उसका वर्णन कवि ने किया है–

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति ह्रदयं संस्पृष्ठमुत्कण्ठया,
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुष्श्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।। (अभि॰ 4.6)

इसी प्रकार मेघदूत मे यक्ष की विरहावस्था का , रघुवंश के द्वितीय सर्ग में राजा दिलीप द्वारा पुत्र प्राप्ति के लिए गौसेवा, अष्टमसर्ग में पत्नीवियोग में अजविलाप, कुमारसम्भव मे रतिविलाप आदि नैक सामाजिक विषयों को समाज के दृष्टिपथ पर अवतारित किया है।

प्रकृति स्नेह – कवि का आशय यह है कि – प्रकृति से आप यदि स्नेह करोगे और उसका पालन पोषण करोगे तो प्रकृति भी आप को सौ गुणा अधिक स्नेह और पोषण करेगी। उदा॰ – के लिए शकुन्तला के चरम प्रकृति प्रेम का प्रभाव यह होता है कि उसकी विदाई में वहाँ के वन देवताओं और तरू–लताओ ने अलौकिक वस्त्राभूषणादि तक उसके लिए उपहार मे त्याग कर डाले। जैसे कहा गया है कि–

उद्गलितदर्भकवला मृगाः परित्यक्तनर्तनामयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।। (अभि॰ 4/12)

श्लोक के माध्यम से कवि एक और प्रकृति प्रेमी होने का संकेत दिया है तो दूसरी ओर कवि का भाव यह है कि यदि जड़ वस्तुओं से स्नेह करने पर बदले में इतना स्नेह मिलता है तो चेतन जीव से स्नेह करने पर कितना मिलेगा । वस्तुतः प्रकृति प्रेम और परस्पर मानव प्रेम की साम्प्रतिक समाज में नितान्त आवश्यकता है। क्योंकि स्वच्छ समाज (पर्यावरण) में ही स्वस्थ समाज का निर्माण होता है एवं स्वस्थ समाज समृध्द राष्ट्र का निर्माण करता है। इसलिए वर्तमान समय मे भारत सरकार भी इस पर जोर दे रही है।

कवि भास ने भी अपनी कृतियों मे समाज की चिन्ता नैक स्थलो पर प्रकट की है। जैसे–दरिद्रचारूदत्तम् में – गरीबी के कारण चारूदत्त की स्थिति कैसी हो जाती है इसका वर्णन किया है। और कवि ने कहा है कि –

दारिद्र्यात्पुरूषस्य बान्धवजनो वाक्ये न सन्तिष्ठते,
सत्वं हासमुपैति शीलशशिनः कान्ति परिम्लायते ———।।

– (दरिद्रचारूदत्तम्)

कवि सुमित्रानन्दन पंत ने भी 'संध्या के बाद' कविता में समाज में गरीबी को लक्ष्य कर अपने विचार व्यक्त किये है। कवि कहतें है कि –

दरिद्रता पापो की जननी।
मिटें जनों के पाप, ताप, भय,
सुन्दर हों अधिवास, वसन, तन
पशु पर फिर मानव की हो जय?
व्यक्ति नहीं, जग की परिपाटी
दोषी जन के दुःख क्लेश की,
जन का श्रम जन में बँट जाए,
प्रजा सुखी हो देश देश की। (संध्या के बाद)

कवि ने यहाँ अपनी प्रगतिवादी विचार धारा व्यक्त कर ग्रामीणों के सुखमय जीवन को लेकर अपनी चिन्ता प्रकट की है।

कवि एमिली डिंकसन भी समाज मे रंग , जाति , धर्म के नाम व्याप्त कुरीतियो पर अपने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहते है कि–

Colour ---- Caste----Denomination--
These----are---Time's Affair
Death's diviner classifing
Does not know they are ----

As in sleep----All Hue forgotten---
Tenets----Put behind-----
Death large ----Democratic fingers
Rub away the Brand---------
(Colur, cast, Denomination by Emily Dicknson 1864)

विलियम ब्लैक भी तत्कालीन समाज में व्याप्त गरीबी को कविता माध्यम से प्रकट करते है कि–

I wonder thro' each charter'd street,
Never where the charter'd Thames does flow,
And mark in every face I meet
meet of weakness, mark of woe.

In every cry of every man,
In every Infants cry of fear,
In every voice : In every ban,
The mind forg'd manacles I hear (LONDAN)

भर्तृहरि नीतिशतक में भौतिकता में संलिप्त मानव जाति के लिए सन्देश देते हुए कहते है कि –

केयूराणि न भूषयन्ति पुरूषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला,
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरूषं या संस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।। (नीति॰19)

मानवों का समूह ही समाज है और समाज में किसकें साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए जिससे समाज मे सद्गति बनी रहे । इसके लिए कवि कहते हैं कि –

दाक्षिण्यं स्वजने दया परिजने शाठयं सदा दुर्जने,
प्रीतिः साधुजने नयो नृपजने विद्वज्जने चार्जवम्।
शौर्यं शत्रुजने क्षमा गुरूजने कान्ताजने धृष्टता
ये चैवं पुरूषाः कलासु कुशलास्तेष्वेव लोकस्थितिः।।(नीति॰22)

भारतीय मनीषियों – ऋषियों – कवियों ने वर्तमान काल मे नैकविध समस्याओं सें दग्ध मानवजाति के लिए '**तकारत्रयं**' का उपदेश दिया है। वे तीन तकार है – त्याग,तपस्या,तपोवन। विश्वशान्ति को भङ्ग करने वाली वस्तु का नाम स्वार्थपरायणता है। इसका त्याग की भावना से निदान किया जा सकता है और त्याग के लिए तपस्या की आवश्कता होती है तपस्या के लिए तपोवन चाहिए । जब यह विश्व त्याग और तपस्या और तपोवन का सहारा लेकर गमन करेगा , तब इस मही से अशान्ति,आपसी कलह,विद्वेष,वैमनस्य नष्ट होने लगेगा और स्वच्छ,स्वस्थ,समृद्व समाज का निर्माण होगा । अतः तकारत्रयं की भावना का पालन करना नितान्त आवश्यक है।

अतः यह कहना अपने आप में सत्य है कि चाहे संस्कतृभाषा के व्यास – भास – कलिदास हेा या हिंदी भाषा के प्रसाद – पंत – निराला या अंग्रेजी के ब्लेक – शैली – डिंकसन इत्यादि सभी ने देश काल परिस्थिति के अनुसार समाज की चिन्ताओं ,वेदनाओं,भावनाओं को अपनी कविता में प्रकट कर जनता को जागरूक करने का प्रयास किया है। विशेषतः प्रचीन कवियों की चर्चा की जाए उन कवियों ने कविताओं के माध्यम से सत्य – शिव – सौन्दर्य की अलौकिक रसधारा प्रवाहित की है। वह आज भी समाज को नई चेतना प्रदान करती हैं, सही मार्ग प्रशस्त करती है मानवीय गुणों को प्रतिस्थापित करती है। इसलिए आधुनिक कविताकार भी प्राचीन कवियों के सत्य – शिव – सौन्दर्य युक्त विचारों को वर्तमानकालिक विषयो के साथ समन्वित कर समाज की ज्वलन्त चिन्ताओ,समस्याओं, परिस्थितियों को कविता के माध्यम से समाज के दृष्टिपथ पर अवतारित कर समाज को नई चेतना प्रदान करें। कविजन मानव जाति का अपने विचारो से ध्यानकार्षित कर उसमें उनके कर्त्तव्यों के प्रति जागरूकता पैदा करें एवं कविता के माध्यम से उनकी समस्याओं को निदान भी प्रस्तुत करें।

अतः यह अपनें आप में स्वतः सिध्द होता है कि समाज की चिन्ता का केन्द्र कविता में है। और चाहे फिर वह प्राचीनकाल हो या मध्य या फिर वर्तमानकाल कविताकारों नें समाज की चिन्ता को कविताओं के माध्यम से उद्घाटित किया है।

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिध्दाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम्।।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

	ग्रन्थ नाम	लेखक/सम्पादक	प्रकाशन
1.	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	चौखम्भाप्रकाशन वाराणसी
2.	काव्यप्रकाश	मम्मटाचार्य	चौखम्भाप्रकाशन वाराणसी
3.	कालिदास ग्रन्थावली	पं॰सीताराम चतुर्वेदी	उ॰प्र॰ संस्कृत संस्थान
4.	कालिदास ग्रन्थावली	रामचन्द्र मिश्र	चौखम्भासुरभारती प्रकाशन वाराणसी
5.	दरिद्रचारूदत्तम्	भास	चौखम्भाविद्याभवन वाराणसी
6.	नीतिशतकम्	भर्त्तृहरि	चौखम्भाविद्याभवन वाराणसी
7.	मृच्छकटिकम्	शूद्रक	चौखम्भाप्रकाशन वाराणसी
8.	रघुवंशमहाकाव्य	कालिदास	चौखम्भा–प्रकाशन कृष्णदास अकादमी वाराणसी
9.	शिशुपालवध	माघ	चौखम्भा वाराणसी
10.	संस्कृतनिबन्धशतक	डॉ॰ कपिलदेव द्विवेदी	विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
11.	संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास	बलदेव उपाध्याय	उ॰प्र॰ संस्कृत संस्थान
12.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचन्द्र मिश्र	चौखम्भाविद्याभवन वाराणसी
13.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	डॉ॰ उमाशंकर ऋषि	चौखम्भा विश्वभारती वाराणसी
14.	संस्कृत प्रभा	डॉ॰ कपिलदेव द्विवेदी	उ॰प्र॰ संस्कृत संस्थान
15.	संध्या के बाद	सुमित्रानन्दन पंत	अन्तर्जाल
16.	LONDON POEM	WILLIAM BLAKE	INTERNET
17	COLOR CASTE DENOMINATION	EMILY DICKNSON	INTERNET